Sangeet Manthan: Article 5 of N: January 24, 2013
By Dr. Sudha Patwardhan

Send comments and questions to: reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

भैरव के कुछ और प्रकार इस प्रकार से हैं :-

१. बन्गाल भैरव-- भैरव थाट से उत्पन्न इस राग में रिषभ और धैवत कोमल होते हैं| निषाद पूर्ण रूप से वर्जित रहता है| अत:राग की जाति षाडव है| वादी धैवत तथा संवादी रिषभ हैं| निषाद वर्जित होने से भैरव से इसकी भिन्नता परिलक्षित हों उठती है| अवरोह में ग वक्र रहता है और राग के वाचक के रूप में साधमप यह स्वर संगति स्पष्ट रहती है| राग का रूप गाने में सरल और सुनने में अच्छा प्रतीत होता है| गान समय भैरव के समान प्रात:काल ही है|

२. प्रभात भैरव-- यह भैरव थाट से उत्पन्न राग है एवम भैरव अंग से गाया जाता है| रिषभ और धैवत कोमल हैंतथा दोनों मध्यमों का प्रयोग किया जाता है| वादी मध्यम एवं संवादी षड्ज हैं| गान समय दिन का प्रथम प्रहर ही है| भैरव तथा ललित राग के मेल से इस राग की रचना हुई है| ललित राग की--मधम [तीव्र] म गम-- यह स्वरावली लेकर ललित अंग दर्शाया जाता है| पश्चात् गमप गमरे [कोमल रे] इस प्रकार भैरव की स्वर संगति ली जाती है| यह राग उत्तरांग प्रधान है और भैरव का प्रकार होने से उसी की प्रधानता होती है| कुछ विद्वान धैवत- ऋषभ को वादी-संवादी मानते हैं, किन्तु म-सा के पक्षधर अधिक हैं| ललित का अंग दिखाते समय शुध्द मध्यम पर बार बार न्यास होता है, इससे म-सा वादी-संवादी मानना समीचीन प्रतीत होता है| आलाप तानोंमें दोनों रागों का मिश्रण करना कौशल्य पूर्ण कार्य होता है|

३. आनंद भैरव --- यह भी एक भैरव थाट से उत्पन्न राग है| भैरव अंग से गाया जाता है| रिषभ और निषाद कोमल हैं| पूर्वांग में भैरव और उत्तरांग में बिलावल इस प्रकार से इसे गाया जाता है| दिन के प्रथम प्रहर में गाते हैं| रिषभ स्वर को भैरव के समान ही आन्दोलित किया जाता है| कोमल निषाद का प्रयोग अल्हैया बिलावल की तरह वक्र रूप से किया जाता है| पसाधनिप [कोमल निषाद] इस प्रकारसे स्वरावली का प्रयोग होता है एवं पधनिसा इस प्रकार से सीधा प्रयोग नहीं होता| नन्द और बिलावल का मिश्रण करके गाया जाने वाला एक आनंद भैरव का रूप भी है|

४. शिवमत भैरव -- इसे शिव भैरव के नाम से भी जाना जाता है|रिषभ एवं धैवत कोमल लगने के साथ साथ ग व नी के दोनों रूप लेते हुए इसे गाया जाता है| मध्यम को शुध्द ही रखा जाता है| इसे भैरव अंग से ही गाते हैं| इस राग को किसी एक थाट में नहीं माना जा सकता है, क्यों कि यद्यपि इसमें रिषभ और धैवत कोमल हैं तथा आरोह में ग व नी शुद्ध लगते हैं, तथापि अवरोह में ग और नी कोमल लगने के कारण तोड़ी, आसावरी तथा भैरवी का आभास पैदा होता है| अत:इसे मिश्र मेल से उत्पन्न मानना होगा| गानसमय दिन का पहला फर है| प -सा वादी -संवादी हैं| राग का स्वरूप वक्र है और राग कि जाति भी

वक्र सम्पूर्ण है|राग की बढ़त भैरव अंग से होती हैएवम आलाप व तानों के अंत में रेगरेसा [ग कोमल] इस प्रकार से लिया जाता है| एक अन्य मत के अनुसार ध-रे वादी-संवादी हैं| यह कहा जाता है कि प्राचीन समय में शुद्ध भैरव का यही रूप हुआ करता था|

५. कौसी भैरव--इसे कौशी भैरव भी कहा जाता है| यह भैरव का प्रकार है| इसे मालव कौशिक व भैरव के मेल से बना राग बताया जाता है| कुछ विद्वान इसे कौसी और भैरव के मिश्रण से बना बताते हैं| पहले बागेश्री को कौसी का एक रूप माना जाता था| रे,ध व नी के दो दो रूप इस राग में प्रयुक्त होते हैं| ग तथा म शुद्ध हैं| म-सा वादी संवादी हैं| भैरव का प्रकार होने से गान समय दिन का प्रथम प्रहर है| आरम्भ करते समय आरोह के पूर्वांग में बागेश्री व उत्तरांग में भैरव होता है, अवरोह में पूर्वांग में भैरव आता है| अवरोह में रेनिधप--इस प्रकार रिषभ व धैवत शुद्ध लिए जाते हैं| और आरोहमे रे ध कोमल होते हैं| निषाद आरोह में शुद्ध व अवरोह में कोमल होता है| इसका निकटवर्ती राग है-भैरव बहार | किन्तु उसमे केवल शुद्ध धैवत का प्रयोग होता हैऔर गंधार दोनों आते हैं| किन्तु भैरव बहार बहार का प्रकार होने से भर का प्रभाव अधिक रहता है,जबकि कौसी भैरव भैरव का प्रकार होने से भैरव अंग प्रबल रहता है|

६. गुणक्री - यह भैरव मेल से उत्पन्न राग है| भैरव अंग से गाया जाता है| रे व ध कोमल हैं और ग - नी वर्जित हैं| अत:राग की जाति औडव है| इसे प्रात:प्रथम प्रहर में गाते हैं| कुछ गुणीजनों के मातम सा-प वादी संवादी हैं और कुछ विद्वान धैवत व रिषभ को वादी संवादी मानते हैं| राग कि प्रकृति गंभीर एवं शांत होने से अल्लापों कि अधिकता रहती है, तानें काम ली जाती हैं| विलंबित लय में गायन अधिक सुहाता है| जोगिया इसका निकटवर्ती राग है, किन्तु उसमे अवरोह में कोमल निषाद आता है तथा गंधार का अल्प मात्रा में प्रयोग होता है| इससे दोनों रागों में भेद स्पष्ट हों जाता है| इसे भैरव गुनकली या गुणकारी भी कहते हैं, कुछ लोग इस राग को जोगिया गुनक्री भी कहते हैं|

इस लेख को यहीं समाप्त करते हैं|फिर जल्दी ही मुलाकात होगी कुछ और जानकारी के साथ—

English Translation:

Following are some more Bhairav varieties .they are as follows--

1. Bangal Bhairav- This Rag is from Bhairav Thaat.Rishabh and Dhaivat are flat ,Nishaad is completely omitted svar. That is why rag jati is shadav. Dhaivat is Vadee [main note], Rishabh is Sanvadee [next to main note] Because Nishad is totally absent ,this Rag seems quite different than Bhairav.Gandhar is Vakra in Avaroh [a specific note that changes the usual sequence of ascending or descending is called Vakr] and special svaravali or phrase of the Rag is Sa Dha Ma Pa [Dhaivat is komal]. Rag is simple one and very interestimg. It is sung in the morning.

2. Prabhat Bhairav- This Rag is from Bhairav Thaat and is sung with Bhairav Ang. Rishabh and Dhaivat are flat and both the Madhyamas are used in the Rag. Vadee is Madhyam and Sanvadee is Shadaj. It is sung in the first Prahar [early in the morning] of the day. This is a mixture of Bhairav and Lalit Rag. Ma Dha Ma [sharp Madhyam] Ma Ga Ma is the phrase that is used in this Rag to show Lalit Ang, then Ga Ma Pa, Ga Ma Re Sa [komal Re] comes to establish Bhairav Ang.This Rag is Uttarang pradhan ,which means later part of the Saptak [Octave] is prominant, because it is basically a variety of Bhairav Rag. To show Lalit Ang Madhyam is sung frequently, that is nyas [pause] on Madhyam.In some musicians' opinion Dhaivat and Rishabh should be the Vadee -Sanvadee, but as Madhyam is used frequently to show Lalit Ang , it seems appropriate o treat Madhyam and Shadaj as vadee -sanvadee. It is a tactful job to sing aalap and tanas with good proportion of both the Ragas.

3. Aanand Bhairav-- This Rag also comes from Bhairav Thaat.It is sung with Bharav Ang,Rishabh and Nishad are komal. Poorvang [first part of the Saptak] contains Bhairav and later part [uttarang] takes Bilaval Ang. It is sung in the first prahar of the day. Rishabh is vibrated in this Rag -just like Bhairav. Komal Nishad is used as it comes in Alhaiya Bilaval. For instance-- Pa Sa Dha Nee Pa [Komal Nishad] is taken to show Alhaiya Bilaval Angand naturally Pa Dha Nee Sa is never taken to show Bilaval Ang. One more variety of Aanand Bhairav exists which is a combination of Nand and Bilaval.

4. Shivmat Bhairav-- It is also known as Shiv Bhairav. Rishabh and Dhaivat are Komal and both the Gandharas, both the Nishadas are there in this Rag. Madhyam is always shuddha. It is sung with Bhairav Ang only. This Rag can't be kept in one Thaat, because though Re and Dha are Komal and while ascending Ga Nee are Shuddha, while descending Ga Nee are Komal. There are shades of Todi, Asavari and Bhairavi. So this Rag should be treated as a Mishra Melotpanna Rag [a Rag that belongs to more than one Mel or Thaat]. Singing time is first Prahar of the day. Vadee-Sanvadee are Pa-Sa. The treatment of Rag is somewhat Vakra and that's why Rag jati is also Vakra. It is sung with Bhairav Ang and at the end of Alapand Tanas -- Re Ga Re Sa [G Komal] is a phrase that is always used. Some scholars say that Dha and Re are Vadee-Sanvadee in the Rag. But the former opinion is mostly followed. It is said that in ancient times Shuddh Bhairav was sung in the same way.

5. Kaushi Bharav-- It is also pronounced as Kaushi Bhairav. It is a variety of Bhairav.Some scholars say that it is a mixture of Malav Kaushik and Bhairav. Others say that it is a combination of Kausi and Bhairav. In olden times Bageshree was treated as a version of Kausi. In this Rag both the versions of Re, Dha and Ni are used. Ga and Ma are shuddha. Madhyam and Shadaj are Vadee -Sanvadee. The Rag being a variety of Bhairav is sung in the first Prahar of the day. While rendering the Rag to start with poorvang of bageshree, then uttarang of aaroh is Bhairav; then in Avaroh Re Ni Dha Pa -- Re and Dha are Shuddha, and Nishad is Komal. Where as in Aaroh Re ,Dha are Komal, Nishad is Shuddha. A similar Rag is Bhairav Bahar, but there Dhaivat is always Shuddha, though both the Gandharas are there. Main difference is Kausi Bhairav is a variety of Bhairav and Bhairav Bahar is a variety of bahar. So in in the first Rag it is Bhairav Ang and in the second one Bahar is the main Ang.

6. Gunakree --This Rag comes from Bhairav Thaat and sung with Bhairav Ang. Gandhar, Nishad are absent; Re,Dha are Komal. The jati of the Rag is Audav. The time for singing is pratham prahar of the day. Some scholars say that Sa-Pa are Vadee-Sanvadee, others say that Dhaivat-Rishabh should be treated as Vadee-Sanvadee. The nature of the Rag is serious and serene ,Vilambit [slow] laya and alap gayan [rendering] is preferred and comparatively tanas are less important. Jogiya or Jogi is a similar Rag, but it takes flat - Komal Ni while descending and rarely Gandhar is used in Jogiya. So the difference can be easily known. This Rag is named as Bhairav Gunkali or Gunkali, or some call it Jogiya Gunakree. In the next episode we will see some evening Ragas, that come under "Sandhyakalin Sandhiprakash Ragas'.